चम्पारण ज्ञानाग्रह

प्रार्थना-सभा सामग्री, दिनांक– 21 अगस्त 2026, अंक –341.

प्रस्तुतिः- GOVT. PS बोदसर, बगहा-2, प. चम्पारण (10010803702)

सौजन्य :- "TEACHERS OF BIHAR - THE CHANGE MAKERS."

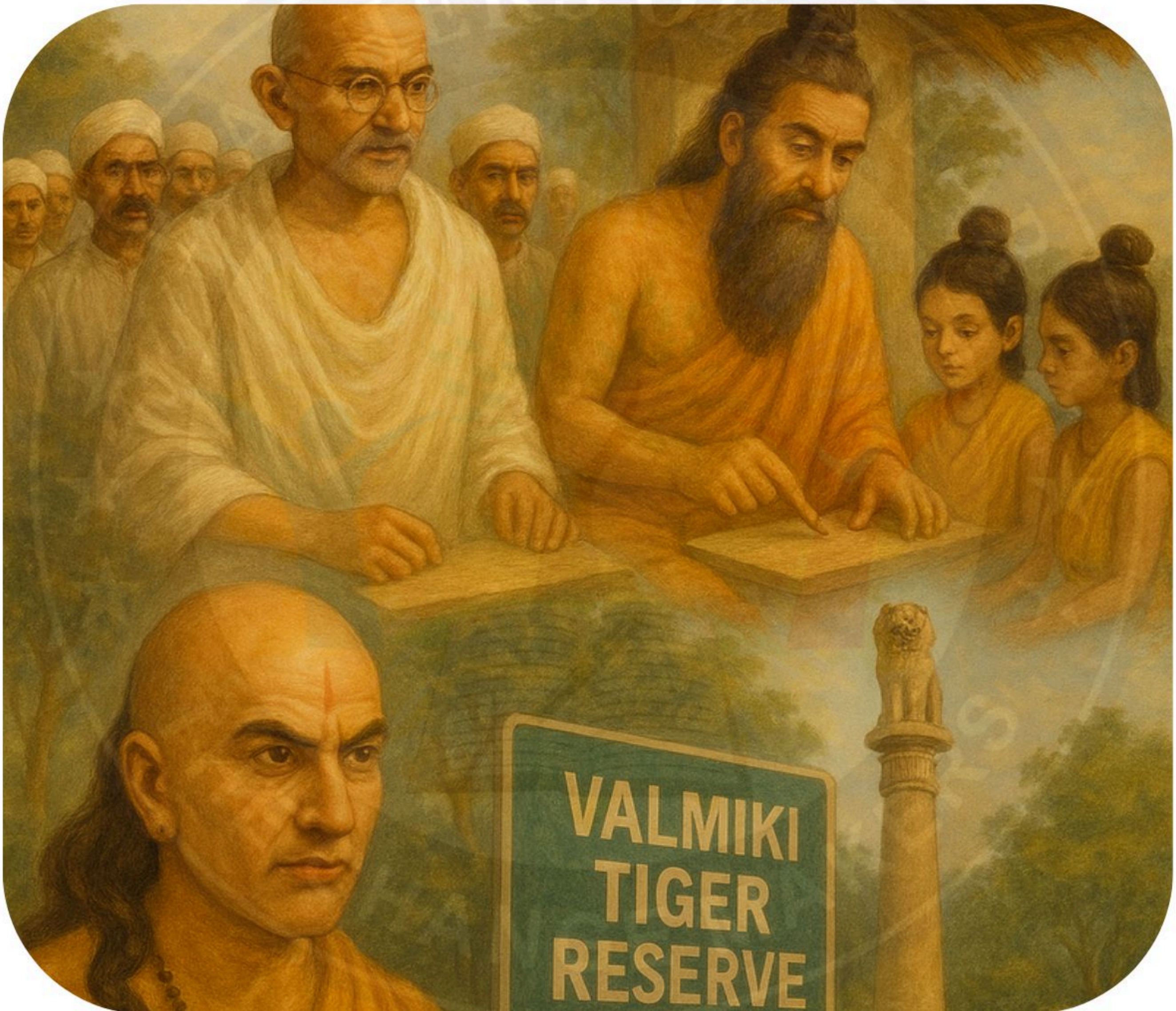

"ज्ञान वह धन है जिसे कोई चुरा नहीं सकता।"

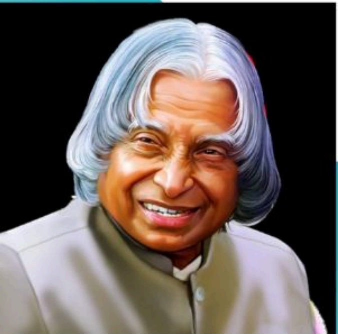

विद्यार्थियों की बौद्धिक और नैतिक उन्नति की ओर....

संपादकः- शैलेन्द्र कुमार

www.teachersofbihar.org

अनुभाग-1

"प्रार्थना-सभा सामग्री"

Friday Prayer

लब पे आती है दुआ बनके तमन्ना मेरी,
जिंदगी शम्मे की सूरत हो खुदाया मेरी।

हो मेरे दम से यूं ही मेरे वतन की ज़ीनत,
जिस तरह फूल से होती है चमन की ज़ीनत।

जिंदगी हो मेरी परवान की सूरत या रब,
इल्म की शम्मा से हो मुझको मोहब्बत या रब।

हो मेरा काम ग़रीबों की हिमायत करना,
दर्दमंदों से जइफों से मोहब्बत करना।

मेरे अल्लाह बुराई से बचना मुझको,
नेक जो राह हो उस रह पे चलाना मुझको।

-मोहम्मद आलम इक़बाल

बिहार राज्य गीत

मेरे भारत के कंठहार ,
तुझको शत-शत वंदन बिहार..!

तू वाल्मीकि की रामायण
तू वैशाली का लोकतंत्र,
तू बोधिसत्व की करूणा है
तू महावीर का शांतिमंत्र
तू नालंदा का ज्ञानदीप
तू हीं अक्षत चंदन बिहार

तू है अशोक की धर्मध्वजा
तू गुरूगोविंद की वाणी है
तू आर्यभट्ट तू शेरशाह
तू कुंवर सिंह बलिदानी है
तू बापू की है कर्मभूमि
धरती का नंदन वन बिहार।

तेरी गौरव गाथा अपूर्व
तू विश्व शांति का अग्रदूत
लौटेगा खोया स्वाभिमान
अब जाग चुके तेरे सपूत
अब तू माथे का विजय तिलक
तू आँखों का अंजन बिहार
तुझको शत-शत वंदन बिहार
मेरे भारत के कंठहार ॥

राष्ट्रीय गीत (190 सेकंड)

वन्दे मातरम्।
सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्,
शस्यश्यामलां मातरम्।
वन्दे मातरम्॥
शुभ्रज्योत्स्ना पुलकित यामिनीम्,
फुल्लकुसुमित द्रुमदलशोभिनीम्,
सुहासिनीं सुमधुर भाषिणीम्,
सुखदां वरदां मातरम्।
वन्दे मातरम्॥
कोटि-कोटि कण्ठ कलकल निनाद कराले,
कोटि-कोटि भुजैर्धृत खरकरवाले,
अबला केनो मा एतो बले?
बहुबलधारिणीं नमामि तारिणीं,
रिपुदलवारिणीं मातरम्।
वन्दे मातरम्॥
त्वं हि विद्या, त्वं हि धर्म,
त्वं हि हृदि, त्वं हि मर्म,
त्वं हि प्राणाः शरीरे।
बाहुते त्वं मा शक्ति,
हृदये त्वं मा भक्ति,
तोमारइ प्रतिमा गढ़ि
मन्दिरे-मन्दिरे।
वन्दे मातरम्॥
त्वं हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी,
कमला कमलदलविहारिणी,
वाणी विद्यादायिनी नमामि त्वाम्।
नमामि कमलाम् अमलाम् अतुलाम्,
सुजलां सुफलां मातरम्।
वन्दे मातरम्॥
श्यामलां सरलां सुस्मितां भूषिताम्,
धरणीं भरणीं मातरम्।
वन्दे मातरम्॥

राष्ट्रगान

जन-गण-मन अधिनायक जय हे
भारत-भाग्य-विधाता।
पंजाब-सिंधु-गुजरात-मराठा
द्रविड़-उत्कल-बंग।
विंध्य-हिमाचल-यमुना-गंगा
उच्छल-जलधि-तरंग।
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मांगे,
गाहे तव जय-गाथा।
जन-गण-मंगलदायक जय हे
भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे।।

संकलन:-
शैलेन्द्र कुमार
प्रधान शिक्षक
Govt. PS बोदसर,
बगहा-2, प. चंपारण।

संविधान की प्रस्तावना

हम, भारत के लोग,
भारत को एक सम्पूर्ण प्रभुत्व-संपन्न, समाजवादी, पंथनिरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को: सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय, विचार अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त कराने के लिए, तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता एवं अखंडता सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए दृढ़ संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवम्बर, 1949 ई० (मिति मार्ग शीर्ष शुक्ल सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।

मौलिक अधिकार

1. "समता का अधिकार (Right to Equality.)" - अनुच्छेद 14–18
2. "स्वतंत्रता का अधिकार - (Right to Freedom.)" - अनुच्छेद 19–22
3. "शोषण के विरुद्ध अधिकार (Right against Exploitation.)" - अनुच्छेद 23–24
4. "धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार (Right to Freedom of Religion.)" - अनुच्छेद 25–28
5. "संस्कृति एवं शिक्षा संबंधी अधिकार (Cultural and Educational Right.)" - अनुच्छेद 29–30
6. "संवैधानिक उपचारों का अधिकार (Right to Constitutional Remedies.)" - अनुच्छेद 32

मौलिक कर्तव्य

अनुच्छेद 51(क) – मौलिक कर्तव्य:
भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह –
(1.) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;
(2.) स्वतन्त्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;
(3.) भारत की प्रभुता, एकता और अखण्डता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखे;
(4.) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;
(5.) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हो; ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध हैं;
(6.) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परम्परा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;
(7.) प्राकृतिक पर्यावरण, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, की रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;
(8.) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;
(9.) सार्वजनिक सम्पत्ति की रक्षा करे और हिंसा से दूर रहे;
(10.) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरन्तर बढ़ते हुए प्रयत्नों द्वारा उन्नति की नई ऊँचाइयों को छू ले;
(11.) यदि वह माता-पिता या संरक्षक है, तो छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बच्चे या प्रतिपाल्य को शिक्षा के अवसर प्रदान करे।

वर्ग:- प्राथमिक (1 - 5) के लिए

सामान्य-ज्ञान

प्रश्न 1. न्यूज़ीलैंड की राजधानी क्या है?
उत्तर: वेलिंगटन
प्रश्न 2. पैरालंपिक खेलों में पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला कौन थीं?
उत्तर: दीपा मलिक
प्रश्न 3. 'गिद्धा' किस राज्य का प्रसिद्ध लोकनृत्य है?
उत्तर: पंजाब
प्रश्न 4. रोमन संख्या 'L' का मान क्या है?
उत्तर: 50
प्रश्न 5. वैशाली में स्थित प्रसिद्ध अशोक स्तंभ किस स्थान पर है?
उत्तर: कोल्हुआ
प्रश्न 6. भारत का राष्ट्रीय पशु कौन-सा है?
उत्तर: बाघ
प्रश्न 7. पारा थर्मामीटर के विकास से जुड़े वैज्ञानिक कौन थे?
उत्तर: डेनियल फ़ारेनहाइट
प्रश्न 8. लोकसभा का सामान्य कार्यकाल कितने वर्ष का होता है?
उत्तर: पाँच वर्ष
प्रश्न 9. 'आँखों का तारा' मुहावरे का अर्थ क्या है?
उत्तर: बहुत प्रिय
प्रश्न 10. सूर्य के प्रकाश से हमारे शरीर में कौन-सा विटामिन बनने में सहायता मिलती है?
उत्तर: विटामिन D

संकलन:-
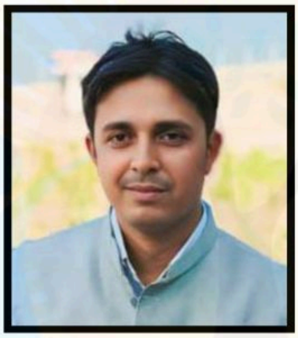
पिन्टू कुमार
विद्यालय अध्यापक
UHS रामपुर, बगहा-2

शब्द - संगम

Fence – (फेन्स) – बाड़
Gate – (गेट) – फाटक
Pathway – (पाथवे) – रास्ता / पगडंडी
Driveway – (ड्राइववे) – वाहन आने-जाने का रास्ता
Courtyard – (कोर्टयार्ड) – आँगन
Terrace – (टेरस) – छत / खुली छत
Canopy – (कैनपी) – छाजन / शामियाना

संकलन:-
सौरभ कुमार
विद्यालय अध्यापक
Govt. UMS गोइती
बगहा-2, प. चम्पारण

English गप-शप

थीम: Simple Future Tense – "कितना ... करोगे/करोगी?" (How much will you ...?)

तुम कितना पानी पियोगे/पियोगी? – How much water will you drink?
तुम कितना खाना खाओगे/खाओगी? – How much food will you eat?
तुम कितना पैसा खर्च करोगे/करोगी? – How much money will you spend?
तुम कितना काम करोगे/करोगी? – How much work will you do?
तुम कितना दूध पियोगे/पियोगी? – How much milk will you drink?

संकलन:-
अभिनव राज
प्रधान शिक्षक
रा० प्रा० वि० शेखधुरवा
चनपटिया, प. चम्पारण।

"सामान्य-ज्ञान"(वर्ग:6-12)

प्र.1. 21 अगस्त को आतंकवाद के पीड़ितों की स्मृति और सम्मान के लिए कौन-सा अंतरराष्ट्रीय दिवस मनाया जाता है? (दिवस ज्ञान)

उत्तर: अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद पीड़ित दिवस

व्याख्या: संयुक्त राष्ट्र महासभा ने प्रस्ताव 72/165 (2017) द्वारा 21 अगस्त को "International Day of Remembrance and Tribute to the Victims of Terrorism" के रूप में घोषित किया। इसका उद्देश्य आतंकवाद के पीड़ितों और जीवित बचे लोगों को सम्मान देना, उनके मानवाधिकारों तथा मौलिक स्वतंत्रताओं की रक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाना और उनके दीर्घकालिक पुनर्वास एवं सहायता की आवश्यकता को रेखांकित करना है। वर्ष 2026 की थीम "Healing through Memory" है, जो स्मृति, सम्मान और सामूहिक उपचार के महत्व पर केंद्रित है।

संदर्भ: United Nations, International Day of Remembrance and Tribute to the Victims of Terrorism, 21 August 2026; UN General Assembly Resolution 72/165.

प्र.2. 21 अगस्त 2026 से संघ लोक सेवा आयोग की कौन-सी महत्वपूर्ण परीक्षा शुरू हो रही है? (समसामयिक)

उत्तर: UPSC मुख्य परीक्षा

व्याख्या: संघ लोक सेवा आयोग की सिविल सेवा परीक्षा 2026 की मुख्य परीक्षा 21 अगस्त 2026 से निर्धारित है। यह परीक्षा प्रारंभिक परीक्षा के बाद चयन प्रक्रिया का महत्वपूर्ण चरण है और इसमें लिखित वर्णनात्मक प्रश्नों के माध्यम से अभ्यर्थियों की विश्लेषणात्मक क्षमता, अभिव्यक्ति, विषय-ज्ञान और समसामयिक मुद्दों की समझ का परीक्षण किया जाता है। UPSC परीक्षा का यह चरण BPSC तथा अन्य राज्य लोक सेवा परीक्षाओं की तैयारी करने वाले विद्यार्थियों के लिए भी उपयोगी संदर्भ प्रस्तुत करता है।

संदर्भ: Union Public Service Commission (UPSC), Civil Services Examination 2026 Schedule/Admit Card; UPSC आधिकारिक पोर्टल।

प्र.3. 'गोदान' उपन्यास के लेखक कौन हैं? (पुस्तक एवं लेखक)

उत्तर: मुंशी प्रेमचंद

व्याख्या: 'गोदान' मुंशी प्रेमचंद का प्रसिद्ध हिंदी उपन्यास है, जिसका प्रकाशन 1936 में हुआ। इसमें किसान जीवन, ग्रामीण अर्थव्यवस्था, सामाजिक विषमता, जमींदारी व्यवस्था, ऋणग्रस्तता और मानवीय संबंधों का यथार्थवादी चित्रण मिलता है। होरी और धनिया इसके प्रमुख पात्र हैं। प्रेमचंद ने साहित्य को समाज के वंचित और श्रमजीवी वर्गों की समस्याओं से जोड़ा। 'गोदान' को हिंदी के महत्वपूर्ण सामाजिक-यथार्थवादी उपन्यासों में गिना जाता है और साहित्यिक सामान्य ज्ञान में इसका विशेष महत्व है।

संदर्भ: मुंशी प्रेमचंद, गोदान; NCERT हिंदी साहित्य संदर्भ सामग्री; साहित्य अकादमी।

प्र.4. पृथ्वी पर जीवों की विविधता को किस वैज्ञानिक शब्द से अभिव्यक्त किया जाता है? (पर्यावरण/ग्लोबल वॉर्मिंग)

उत्तर: जैव-विविधता

व्याख्या: जैव-विविधता से आशय पृथ्वी पर पाए जाने वाले जीवों, उनकी प्रजातियों और पारिस्थितिक तंत्रों की विविधता से है। किसी क्षेत्र में वनस्पतियों, जन्तुओं और सूक्ष्मजीवों की विविधता उस क्षेत्र के पारिस्थितिक संतुलन को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वनों की कटाई, आवास-विनाश, प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन और अत्यधिक दोहन जैव-विविधता के लिए प्रमुख खतरे हैं। इसलिए संरक्षित क्षेत्र, वन्यजीव संरक्षण और प्राकृतिक संसाधनों का सतत उपयोग आवश्यक है।

संदर्भ: NCERT, कक्षा 10 विज्ञान, अध्याय–15 'हमारा पर्यावरण'; NCERT, कक्षा 10 भूगोल, अध्याय–2 'वन और वन्यजीव संसाधन'।

प्र.5. 1857 के विद्रोह में झाँसी का नेतृत्व किसने किया था? (इतिहास)

उत्तर: रानी लक्ष्मीबाई

व्याख्या: 1857 के विद्रोह में झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध सशक्त प्रतिरोध किया। झाँसी के उत्तराधिकार के प्रश्न और ब्रिटिश विलय नीति ने उनके संघर्ष को तीव्र किया। उन्होंने अपने सैनिकों के साथ वीरतापूर्वक युद्ध किया और 1858 में ग्वालियर के निकट युद्ध करते हुए वीरगति प्राप्त की। 1857 का विद्रोह भारतीय इतिहास में औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध व्यापक राजनीतिक, सैन्य और सामाजिक असंतोष की महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति माना जाता है।

संदर्भ: NCERT, कक्षा 8 इतिहास, हमारे अतीत–III, अध्याय–5 'जब जनता बगावत करती है: 1857 और उसके बाद'।

"सामान्य-ज्ञान"

प्र.6. भारत में लाल और पीली मिट्टी मुख्यतः किस प्रक्रिया से विकसित होती है? (भूगोल)
उत्तर: चट्टानों का अपक्षय
व्याख्या: लाल और पीली मिट्टियाँ मुख्यतः प्राचीन क्रिस्टलीय तथा कायांतरित चट्टानों के अपक्षय से विकसित होती हैं। इनमें लौह तत्व की उपस्थिति के कारण मिट्टी का रंग सामान्यतः लाल दिखाई देता है; जलयोजन की स्थिति में इसका रंग पीला हो सकता है। ये मिट्टियाँ प्रायद्वीपीय भारत के विभिन्न भागों में पाई जाती हैं। इनकी उर्वरता बढ़ाने के लिए उचित सिंचाई और खाद का प्रयोग आवश्यक हो सकता है।
संदर्भ: NCERT, कक्षा 10 भूगोल, समकालीन भारत–II, अध्याय–1 'संसाधन एवं विकास', मृदा संसाधन।

प्र.7. भारतीय संविधान में चुनावों की निगरानी और नियंत्रण का दायित्व किस संवैधानिक संस्था को दिया गया है? (राजनीति एवं संविधान)
उत्तर: निर्वाचन आयोग
व्याख्या: भारत में स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव सुनिश्चित करने के लिए संविधान के अनुच्छेद 324 के अंतर्गत निर्वाचन आयोग की स्थापना की गई है। आयोग संसद, राज्य विधानसभाओं तथा राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति के चुनावों के लिए निर्वाचन प्रक्रिया के अधीक्षण, निर्देशन और नियंत्रण का कार्य करता है। लोकतांत्रिक शासन में स्वतंत्र निर्वाचन व्यवस्था अत्यंत आवश्यक है क्योंकि इसके माध्यम से नागरिक अपने प्रतिनिधियों का चुनाव करते हैं और सरकार की लोकतांत्रिक वैधता सुनिश्चित होती है।
संदर्भ: NCERT, कक्षा 9 राजनीति विज्ञान, लोकतांत्रिक राजनीति–I, अध्याय–3 'निर्वाचन और लोकतंत्र'; भारत का संविधान, अनुच्छेद 324।

प्र.8. पौधों में जल और खनिजों का परिवहन किस ऊतक द्वारा होता है? (विज्ञान)
उत्तर: जाइलम
व्याख्या: जाइलम पौधों का संवहनी ऊतक है जो जड़ों द्वारा अवशोषित जल और खनिज लवणों को तने तथा पत्तियों सहित पौधे के ऊपरी भागों तक पहुँचाता है। जाइलम की वाहिकाएँ और ट्रैकिड इस परिवहन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जल के ऊपर की ओर संचरण में वाष्पोत्सर्जन खिंचाव का भी योगदान होता है। जाइलम और फ्लोएम की भूमिकाओं को समझना पौधों में परिवहन की प्रक्रिया के अध्ययन का आधार है।
संदर्भ: NCERT, कक्षा 10 विज्ञान, अध्याय–6 'जैव प्रक्रम', पौधों में परिवहन संबंधी अनुभाग।

प्र.9. साँची का प्रसिद्ध स्तूप मुख्यतः किस धार्मिक परंपरा से संबंधित है? (कला एवं संस्कृति)
उत्तर: बौद्ध परंपरा
व्याख्या: मध्य प्रदेश स्थित साँची भारत की प्राचीन बौद्ध कला और स्थापत्य विरासत का प्रमुख केंद्र है। यहाँ के स्तूप, तोरण और अन्य स्थापत्य अवशेष बौद्ध धर्म के विकास तथा प्राचीन भारतीय शिल्पकला की उत्कृष्टता को दर्शाते हैं। साँची के तोरणों पर बुद्ध के जीवन और बौद्ध परंपराओं से संबंधित कथाओं को प्रतीकात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह स्थल भारतीय कला, वास्तुकला और धार्मिक इतिहास के अध्ययन में विशेष महत्व रखता है।
संदर्भ: NCERT, कक्षा 11, An Introduction to Indian Art–Part 1, 'Buddhist, Jain and Hindu Art'; UNESCO World Heritage – Buddhist Monuments at Sanchi।

प्र.10. बिहार में गंगा नदी के दक्षिणी तट पर स्थित प्राचीन नगर कौन-सा है? (बिहार सामान्य ज्ञान)
उत्तर: पटना
व्याख्या: पटना बिहार की राजधानी है और ऐतिहासिक रूप से पाटलिपुत्र नाम से प्रसिद्ध रहा है। यह गंगा के दक्षिणी तट पर स्थित है तथा प्राचीन भारत में मौर्य और गुप्त काल सहित अनेक महत्वपूर्ण राजनीतिक शक्तियों का केंद्र रहा। पाटलिपुत्र की स्थिति गंगा नदी के जलमार्गों से जुड़ी होने के कारण व्यापार, प्रशासन और राजनीतिक विस्तार के लिए अनुकूल थी। आधुनिक पटना उसी ऐतिहासिक नगर की दीर्घकालिक परंपरा को आगे बढ़ाता है।
संदर्भ: बिहार सरकार, आधिकारिक पटना जिला पोर्टल; NCERT, कक्षा 6 इतिहास, हमारे अतीत–I, अध्याय–7 'नए प्रश्न और विचार'।

"सामान्य-ज्ञान"

प्र.11. विद्यालय में साँप के काटने की स्थिति में प्राथमिक उपचार के दौरान पीड़ित अंग को कैसा रखना चाहिए? (विद्यालय सुरक्षा कार्यक्रम)

उत्तर: स्थिर रखना

व्याख्या: साँप के काटने की स्थिति में पीड़ित को शांत रखना और काटे गए अंग की अनावश्यक गतिविधि को रोकना महत्वपूर्ण है। अंग को स्थिर रखने से विष के शरीर में तेजी से फैलने का जोखिम कम करने में सहायता मिल सकती है। पीड़ित को तुरंत चिकित्सा सुविधा तक पहुँचाना चाहिए। घाव को काटना, विष चूसना, जलाना या कसकर बाँधना जैसे पारंपरिक उपाय नहीं करने चाहिए। विद्यालय सुरक्षा प्रशिक्षण का उद्देश्य बच्चों और शिक्षकों को ऐसी आपात स्थिति में सही और समयबद्ध प्रतिक्रिया के लिए तैयार करना है।

संदर्भ: BSDMA/BDMC विद्यालय सुरक्षा कैलेंडर, अगस्त W3; WHO, Snakebite Envenoming guidance; बिहार आपदा प्रबंधन प्रशिक्षण मॉड्यूल।

प्र.12. पहेली: "मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ, पर मेरे पैर नहीं हैं। उजाला बढ़े तो मैं स्पष्ट दिखता हूँ और अँधेरा होते ही गायब हो जाता हूँ। मैं कौन हूँ?" (रोचक पहेली)

उत्तर: परछाई

व्याख्या: परछाई किसी वस्तु द्वारा प्रकाश के मार्ग को रोकने पर बनने वाला अंधकारमय क्षेत्र है। जब प्रकाश का स्रोत वस्तु के पीछे से आता है, तो वस्तु के सामने या दूसरी ओर प्रकाश की कमी वाला क्षेत्र दिखाई देता है। दिन में सूर्य के प्रकाश के कारण हमारी परछाई दिखाई देती है और प्रकाश की दिशा बदलने पर उसका आकार तथा दिशा भी बदल सकती है। यह पहेली बच्चों को प्रकाश के सीधी रेखा में संचरण और छाया बनने की अवधारणा से जोड़ती है।

संदर्भ: NCERT, कक्षा 6 विज्ञान, अध्याय–11 'प्रकाश, छायाएँ एवं परावर्तन'।

GS संकलन:-
शैलेन्द्र कुमार
प्रधान शिक्षक
Govt. PS बोदसर
बगहा-2, प. चम्पारण ।

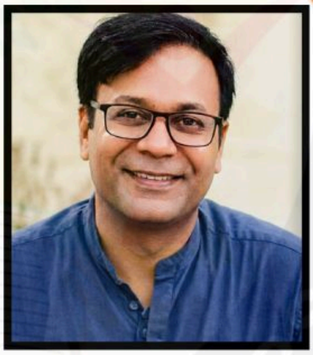

अनुभाग-4

-: शब्द - संगम :-

Amiable (एमिएबल) = Friendly (फ्रेंडली) = मिलनसार / सौम्य
    Antonym – Hostile (हॉस्टाइल) = शत्रुतापूर्ण
Beguile (बिगाइल) = Deceive (डिसीव) = छलना / बहकाना
    Antonym – Enlighten (एनलाइटन) = सही जानकारी देना / प्रबुद्ध करना
Cursory (कर्सरी) = Hasty (हेस्टी) = सरसरी / जल्दबाजी में किया गया
    Antonym – Thorough (थरो) = गहन / पूर्ण
Dwindle (ड्विन्डल) = Decline (डिक्लाइन) = धीरे-धीरे कम होना
    Antonym – Increase (इन्क्रीज़) = बढ़ना
Exorbitant (इग्ज़ॉर्बिटेन्ट) = Excessive (एक्सेसिव) = अत्यधिक / बहुत महँगा
    Antonym – Reasonable (रीज़नेबल) = उचित / वाजिब

~: संकलन :~
राकेश कुमार राव
प्रधानाध्यापक
PMश्री +2 NGY उच्च विद्यालय
वाल्मीकिनगर, बगहा-2 , प. चम्पारण ।

"आज का अख़बार"

NATIONAL NEWS

English Headline: Ministry of New and Renewable Energy Unveils 'National Offshore Wind & Tidal Energy Grid 2.0' to Bolster Coastal Clean Power.
हिन्दी अनुवाद: नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय ने तटीय स्वच्छ ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए 'राष्ट्रीय अपतटीय पवन एवं ज्वारीय ऊर्जा ग्रिड 2.0' का अनावरण किया।
भारत के 2030 तक 500 गीगावाट गैर-जीवाश्म ऊर्जा क्षमता हासिल करने के लक्ष्य के तहत केंद्र सरकार ने तटीय राज्यों के लिए नई अपतटीय पवन एवं महासागरीय ऊर्जा नीति अधिसूचित की है। इसके तहत गुजरात और तमिलनाडु के समुद्री तटों पर गहरे समुद्र में फ्लोटिंग विंड टर्बाइन स्थापित करने और ट्रांसमिशन ग्रिड से जोड़ने के लिए वायबिलिटी गैप फंडिंग (VGF) व बुनियादी ढांचा सहायता प्रदान की जाएगी।

English Headline: NITI Aayog Releases 'National Circular Bio-Economy Index 2026', Ranking States on Agri-Waste Management and Bio-CBG Infrastructure.
हिन्दी अनुवाद: नीति आयोग ने कृषि-अपशिष्ट प्रबंधन और बायो-सीबीजी बुनियादी ढांचे पर राज्यों की रैंकिंग करते हुए 'राष्ट्रीय चक्रीय जैव-अर्थव्यवस्था सूचकांक 2026' जारी किया।
नीति आयोग द्वारा जारी नवीनतम रिपोर्ट में पराली व कृषि-अवशेषों से कंप्रेस्ड बायोगैस (CBG) और 2G इथेनॉल उत्पादन में पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश ने शीर्ष स्थान प्राप्त किया है। यह सूचकांक देश भर में पराली जलाने की घटनाओं को रोकने और ग्रामीण क्षेत्रों में जैव-ऊर्जा क्लस्टरों की स्थापना की प्रगति का मूल्यांकन करता है।

English Headline: ISRO Completes Integrated Vacuum Ignition Hot Test of Indigenous Cryogenic Engine for Next-Gen Heavy Lift Launchers.
हिन्दी अनुवाद: इसरो ने अगली पीढ़ी के भारी लिफ्ट प्रक्षेपकों के लिए स्वदेशी क्रायोजेनिक इंजन का एकीकृत वैक्यूम इग्निशन हॉट टेस्ट सफलतापूर्वक पूरा किया।
भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) ने तमिलनाडु के महेंद्रगिरि स्थित इसरो प्रोपल्शन कॉम्प्लेक्स (IPRC) में उच्च-थ्रस्ट क्रायोजेनिक अपर-स्टेज इंजन का सफल परीक्षण किया। यह इंजन भविष्य के भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन (BAS) के भारी मॉड्यूल और गहरे अंतरिक्ष अभियानों के लिए पेलोड क्षमता को उल्लेखनीय रूप से बढ़ाएगा।

INTERNATIONAL NEWS

English Headline: UN General Assembly Adopts Historic Framework on 'Global Governance for Safe and Ethical Autonomous AI Systems'.
हिन्दी अनुवाद: संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 'सुरक्षित और नैतिक स्वायत्त एआई प्रणालियों के लिए वैश्विक शासन' पर ऐतिहासिक रूपरेखा अपनाई।
संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में आयोजित विशेष सत्र के दौरान सदस्य राष्ट्रों ने स्वायत्त कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Autonomous AI) के पारदर्शी, सुरक्षित और मानवीय निगरानी वाले उपयोग के लिए वैश्विक सुरक्षा मानकों को सर्वसम्मति से स्वीकार किया। इस प्रस्ताव का उद्देश्य अंतरराष्ट्रीय साइबर सुरक्षा को मजबूत करना और विकासशील देशों में डिजिटल विभाजन को कम करना है।

English Headline: World Bank and Asian Development Bank Commit Joint $2.9 Billion Climate Resilience Facility for South Asian River Basins.
हिन्दी अनुवाद: विश्व बैंक और एशियाई विकास बैंक ने दक्षिण एशियाई नदी घाटियों के लिए संयुक्त $2.9 बिलियन की जलवायु लचीलापन सुविधा की घोषणा की।
गंगा, ब्रह्मपुत्र और सिंधु नदी घाटियों में चरम मौसमी घटनाओं, बाढ़ प्रबंधन और पूर्व-चेतावनी प्रणालियों के आधुनिकीकरण के लिए एक बड़ा बहुपक्षीय वित्तीय पैकेज स्वीकृत किया गया है। यह फंड भारत, नेपाल और बांग्लादेश में सीमा पार जल संसाधन प्रबंधन और सतत तटीय बुनियादी ढांचे को गति देगा।

English Headline: World Health Organization (WHO) Activates 'Global One Health Pathogen Genomic Network 4.0' to Tackle Zoonotic Threats.
हिन्दी अनुवाद: विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने जूनोटिक खतरों से निपटने के लिए 'ग्लोबल वन हेल्थ पैथोजन जीनोमिक नेटवर्क 4.0' सक्रिय किया।
जलवायु परिवर्तन और बढ़ते वैश्विक तापमान के कारण उभरते संक्रामक रोगों और उनके म्यूटेशन की समय रहते पहचान करने के लिए डब्ल्यूएचओ ने जिनेवा में उन्नत डिजिटल प्लेटफॉर्म का विस्तार किया है। यह नेटवर्क जीनोम अनुक्रमण डेटा का वास्तविक समय में विश्लेषण करके संभावित महामारियों के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय स्वास्थ्य एजेंसियों को अलर्ट जारी करेगा।

BIHAR NEWS

English Headline: Bihar Cabinet Approves 'Mukhyamantri Clean Fuel & Green Freight Logistics Scheme 2026' with Dedicated Subsidies for Industrial Fleet.
हिन्दी अनुवाद: बिहार कैबिनेट ने औद्योगिक बेड़े के लिए समर्पित सब्सिडी के साथ 'मुख्यमंत्री स्वच्छ ईंधन एवं हरित माल ढुलाई लॉजिस्टिक्स योजना 2026' को मंजूरी दी।
राज्य में औद्योगिक उत्सर्जन को नियंत्रित करने और लॉजिस्टिक्स क्षेत्र में स्वच्छ ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए बिहार सरकार ने वित्तीय प्रोत्साहन योजना स्वीकृत की है। इसके तहत इलेक्ट्रिक वाणिज्यिक ट्रकों, सीएनजी/एलएनजी वाहनों और औद्योगिक पार्कों में ईवी फास्ट-चार्जिंग हब स्थापित करने वाली लॉजिस्टिक्स फर्मों को विशेष सब्सिडी दी जाएगी।

English Headline: Bihar Forest and Climate Change Department Completes Satellite-Based Wetland Inventory in Gandak Basin.
हिन्दी अनुवाद: बिहार वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग ने गंडक बेसिन में उपग्रह-आधारित आर्द्रभूमि सूचीकरण का कार्य पूरा किया।
उत्तर-पश्चिमी बिहार की प्राकृतिक आर्द्रभूमियों (Wetlands) और पारिस्थितिकीय जल निकायों के संरक्षण के लिए रिमोट सेंसिंग आंकड़ों पर आधारित मैपिंग पूरी कर ली गई है। इसका मुख्य उद्देश्य प्राकृतिक जल संचयन क्षेत्रों का अतिक्रमण रोकना, जलीय जैव विविधता का संरक्षण और क्षेत्रीय भूजल स्तर को पुनर्बहाल करना है।

SPORTS NEWS

English Headline: Indian Junior Wrestling Squad Clinches Multiple Medals at World Junior Wrestling Championships.
हिन्दी अनुवाद: भारतीय जूनियर कुश्ती दल ने विश्व जूनियर कुश्ती चैंपियनशिप में कई पदक अपने नाम किए।
अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारतीय युवा पहलवानों ने उत्कृष्ट तकनीकी अनुशासन और शारीरिक क्षमता का प्रदर्शन करते हुए फ्रीस्टाइल और ग्रीको-रोमन दोनों श्रेणियों में स्वर्ण और कांस्य पदक जीते, जिससे भारत ने समग्र पदक तालिका में शीर्ष तीन में स्थान सुनिश्चित किया।

English Headline: International Hockey Federation (FIH) Adopts Advanced Video Analytics and Smart Turf Sensors for Global Tournaments.
हिन्दी अनुवाद: अंतर्राष्ट्रीय हॉकी महासंघ (FIH) ने वैश्विक टूर्नामेंटों के लिए उन्नत वीडियो एनालिटिक्स और स्मार्ट टर्फ सेंसर लागू किए।
मैच के दौरान अंपायरिंग निर्णयों में पारदर्शिता लाने और खेल की गति को बनाए रखने के लिए एफआईएच ने तकनीकी नियमों को अद्यतन किया है। इसके तहत गोल-लाइन और पेनल्टी कॉर्नर के दौरान गेंद के सूक्ष्म विचलन को सटीक रूप से ट्रैक करने के लिए एआई कैमरों और सेंसर का उपयोग किया जाएगा।

संकलन:-
शैलेन्द्र कुमार
प्रधान शिक्षक
रा.प्रा.वि. बोदसर,
बगहा-2, प. चम्पारण ।

✍️ संदेश:

"खबरें केवल वर्तमान का दर्पण नहीं होतीं, बल्कि वे भविष्य के अवसरों और चुनौतियों को समझने की दृष्टि प्रदान करती हैं। निरंतर पढ़ते रहें और जागरूक रहें।"

प्रेरक प्रसंग

अनुभव की छाँव

(21 अगस्त : विश्व वरिष्ठ नागरिक दिवस विशेष)

अजय को अपने दादाजी की बातें अक्सर पुरानी लगती थीं। दादाजी हर काम सावधानी से करने, चीजों को संभालकर रखने और कठिन समय में धैर्य बनाए रखने की सलाह देते। अजय मन ही मन सोचता, "आज के जमाने में इन पुरानी बातों की क्या जरूरत है?"

एक दिन अजय के घर कुछ जरूरी दस्तावेज ढूँढ़े जा रहे थे। माँ को एक महत्वपूर्ण कागज चाहिए था, लेकिन काफी खोजने के बाद भी वह नहीं मिला। अलमारी, दराज और फाइलें सब देख ली गईं। घर में सभी परेशान होने लगे।

दादाजी चुपचाप सब देख रहे थे। उन्होंने पूछा, "कौन-सा कागज चाहिए?"

माँ ने बताया। दादाजी कुछ देर सोचकर बोले, "पिछली बार जब इसकी जरूरत पड़ी थी, तब मैंने इसकी एक प्रति अलग फाइल में रखी थी। नीली फाइल देखो।"

फाइल खोली गई तो वही कागज सुरक्षित रखा मिला। माँ ने राहत की साँस ली।

अजय आश्चर्य से दादाजी को देखने लगा। उसने पूछा, "दादाजी, आपको कैसे याद रहा?"

दादाजी मुस्कुराए, "बेटा, उम्र के साथ अनुभव बढ़ता है। हम हर चीज मोबाइल में नहीं रखते थे, इसलिए जरूरी चीजों को व्यवस्थित रखना सीखना पड़ा।"

उस शाम अजय पहली बार दादाजी के पास बैठकर उनकी बातें ध्यान से सुनने लगा। दादाजी ने अपने जीवन के कई अनुभव सुनाए—कैसे उन्होंने कठिन परिस्थितियों में परिवार को संभाला, सीमित साधनों में जरूरतें पूरी कीं और छोटी-छोटी चीजों का महत्व समझा।

अजय को महसूस हुआ कि दादाजी केवल परिवार के बुजुर्ग नहीं, बल्कि अनुभवों से भरी एक जीवित किताब हैं।

अगले दिन मालती मैडम ने बच्चों से कहा, "बुजुर्गों का सम्मान केवल उनके पैर छूने तक सीमित नहीं होना चाहिए। उनकी बातें सुनना, समय देना और उनके अनुभव से सीखना भी सम्मान है।"

अब अजय को दादाजी की बातें पुरानी नहीं लगती थीं। उसे उनमें अनुभव की छाँव महसूस होती थी।

संदेश: "बुजुर्ग बीते समय की निशानी नहीं, अनुभव की वह छाँव हैं जो नई पीढ़ी को सही राह दिखाती है।"

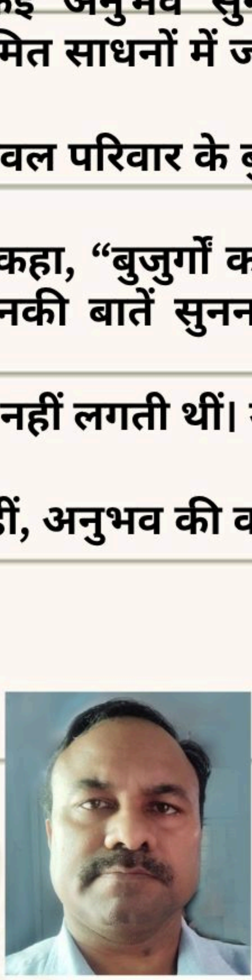

................✍️
मनोज कुमार
प्रधानाध्यापक
रा.म.वि.वाल्मीकिनगर
बगहा 2, प. चम्पारण।

आइए, हम मिलकर छात्रों के ज्ञान, प्रेरणा और जिज्ञासा को नयी दिशा दें। 🌿🙏

अनुभाग-7

लोक नृत्य "झारी"

चम्पारण की खास लोक संगीत/नृत्य "झारी"

बिहार के तराई और चंपारण की सोंधी माटी में सावन की फुहारों के बीच जब हवाएं सरसराती हैं, तो वहां की चौपालों और सड़कों पर गूंजने वाली छड़ियों की 'खट-खट' की ताल सिर्फ एक आवाज़ नहीं, बल्कि सदियों पुरानी सांस्कृतिक जीवंतता की धड़कन है। गुजरात के डांडिया या देश के अन्य हिस्सों के पारंपरिक लाठी नृत्यों के समकक्ष खड़ी यह स्वदेशी लोककला "झारी" कहलाती है, जो मुख्य रूप से श्रावण मास, नागपंचमी और कजरी के उल्लासभरे दिनों में अपनी पूरी ऊर्जा के साथ प्रकट होती है। यह नृत्य और गीत का एक ऐसा अनूठा संगम है जिसमें ग्रामीण समाज की सादगी, खेतों की महक और सामूहिक आनंद का असीम विस्तार समाहित है।

झारी की जड़ें चंपारण के कृषि समाज और श्रम-संस्कृति के बहुत गहरे में उतरी हुई हैं। ऐतिहासिक रूप से, धान की कठिन रोपनी के थकान भरे दिनों के बाद जब सावन की रिमझिम फुहारें वातावरण को सुहाना बनाती थीं, तब ग्रामीण युवा और किसान शाम ढलते ही चौपालों पर एकत्र होते थे। यह नृत्य उनके लिए केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि शारीरिक स्फूर्ति और मानसिक उल्लास का माध्यम था। इसमें जाति, वर्ग और उम्र के बंधन स्वतः टूट जाते थे और पूरा गांव एक गोल घेरे में आकर हाथ में मजबूत बांस की छड़ियां थाम लेता था। मौखिक परंपराओं के जरिए पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होती यह लोक शैली भगवान शिव की बारात, कृष्ण-लीला, प्रकृति के सौंदर्य और लोक-नायकों के आख्यानों को अपने गीतों के जरिए जीवंत रखती आई है।

झारी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसकी पहचान केवल किसी एक समुदाय की सांस्कृतिक सीमा में बंद नहीं रही। उपलब्ध लोक-साहित्य संबंधी दस्तावेजों में पूर्वांचल की ऐसी परंपराओं का उल्लेख मिलता है, जिनमें हिन्दू समुदाय के लोग मुहर्रम के अवसर पर भी झारी गाते, ताजिया बनाते अथवा उसमें सहभागी होते रहे हैं। लोकरंग की सामग्री में इस साझा परंपरा का प्रत्यक्ष उल्लेख मिलता है और यह भी बताया गया है कि मुहर्रम में झारी लकड़ी के डंडों को बजाकर गाई जाती है। मुहर्रम की ऐतिहासिक-सांस्कृतिक स्मृति, विशेषकर हसन और हुसैन की कथा, संघर्ष और शहादत, लोकभाषा और लोकधुन के माध्यम से सामान्य ग्रामीण समाज तक पहुँचती है। कई जगह झारी गीतों में हसन-हुसैन को योगी के रूप में प्रस्तुत करने वाले लोकगीत का भी उल्लेख मिलता है।

इस लोक शैली की सबसे बड़ी खूबी इसका आंतरिक संगीत और अद्वितीय रिदम है। झारी में किसी बड़े, भारी या कृत्रिम वाद्य यंत्र की अनिवार्यता नहीं होती; कलाकारों के हाथों में लहराती छड़ियों का आपसी टकराव ही वह प्राकृतिक ताल पैदा करता है जो रोंगटे खड़े कर देने वाली ऊर्जा भर देता है। इसमें 'अगुआ' (मुख्य गायक) द्वारा उठाई गई लोकगीत की एक पंक्ति को घेरे में घूम रहे बाकी साथी 'पछुवा' (कोरस) के रूप में एक निश्चित ताल और तीव्र गति से दोहराते हैं। नृत्य की शुरुआत जहां एक धीमी, अनुशासित और संयत लय से होती है, वहीं जैसे-जैसे रात गहरी होती है, इसका टेम्पो (गति) इतना द्रुत और मत्त करने वाला हो जाता है कि दर्शक और कलाकार दोनों लोक-लय की एक अलग ही दुनिया में पहुंच जाते हैं।

विडंबना यह है कि आधुनिकता की अंधी दौड़, मनोरंजन के नए साधनों और पारंपरिक मेलों व चौपालों के सिमटते दायरे ने चंपारण की इस अनमोल थाती को आज विलुप्ति के मुहाने पर ला खड़ा किया है। राज्य के सांस्कृतिक मानचित्र पर इसे वह आधिकारिक पहचान और आदर नहीं मिल पाया जिसकी यह हकदार थी। इसके पारंपरिक गीतों, धुनों और नृत्यों के चरणों का कोई ठोस डिजिटल या लिखित दस्तावेजीकरण न होने के कारण यह कला अब चंपारण के कुछ सुदूर गांवों के बुजुर्गों की स्मृतियों तक सिमट कर रह गई है। यदि समय रहते इसे संरक्षित नहीं किया गया, तो आने वाली पीढ़ियां इस समृद्ध विरासत को केवल किंवदंतियों के रूप में ही जान पाएंगी।

बिहार के कला, संस्कृति एवं युवा विभाग, स्थानीय प्रशासन, विश्वविद्यालयों, विद्यालयों और सांस्कृतिक संगठनों के सहयोग से यदि ऐसे प्रयास किए जाएँ तो झारी जैसी लोकपरंपराएँ केवल संग्रहालय की वस्तु बनने से बच सकती हैं। युवा पीढ़ी इन्हें डिजिटल माध्यम, लोक-मंच, वृत्तचित्र और शैक्षिक गतिविधियों के माध्यम से नए दर्शकों तक पहुँचा सकती है।

इस अनमोल लोक-विरासत को बचाने के लिए अब केवल चिंता व्यक्त करने का नहीं, बल्कि युद्धस्तर पर सार्थक पहल करने का समय है। बिहार सरकार के कला, संस्कृति एवं युवा विभाग को चाहिए कि वे राजकीय महोत्सवों, लोक-उत्सवों और पर्यटन सर्किट में झारी के पारंपरिक दलों को मंच और प्रोत्साहन प्रदान करें, ताकि कलाकारों को आर्थिक संबल भी मिल सके।

साथ ही, आज की Gen Z और युवा पीढ़ी से यह गंभीर आह्वान है कि वे अपनी जड़ों से कटने के बजाय इस स्वदेशी ताल को अपनी आधुनिक सांस्कृतिक पहलों, डिजिटल रील्स और फ्यूजन संगीत का हिस्सा बनाएं। जब तक युवा अपनी मिट्टी की इस अनूठी लय पर गर्व करना नहीं सीखेंगे, तब तक हमारी लोक-पहचान अधूरी रहेगी। झारी को बचाना केवल एक विलुप्त होती कला को पुनर्जीवित करना नहीं है, बल्कि अपनी उस सामूहिक सांस्कृतिक आत्मा को बचाना है जो हमें हमारी पहचान से जोड़ती है।

.................✍️

शैलेन्द्र कुमार

प्रधान शिक्षक

रा.प्रा.वि. बोदसर

बगहा-2, प. चम्पारण।

आइए, हम मिलकर छात्रों के ज्ञान, प्रेरणा और जिज्ञासा को नयी दिशा दें। 🌿🙏

"पाठक पृष्ठ"

दैनिक भास्कर
बेतिया भास्कर 06-04-2026

मंडे पॉजिटिव सरकारी स्कूलों के शिक्षकों की टीम चंपारण ज्ञानाग्रह से मौन किंतु प्रभावी शैक्षिक क्रांति की बन रही साक्षी

चंपारण-ज्ञानाग्रह : बिहार के शैक्षिक पुनर्जागरण का आधुनिक शंखनाद, सरकारी विद्यालयों में ज्ञान की गंगा प्रवाहित हो रही

मणिकांत मिश्र | बेतिया

बिहार की ऐतिहासिक धरती, जो कभी नालंदा और विक्रमशिला के ज्ञानलोक से संपूर्ण विश्व को आलोकित करती थी, आज पुनः एक मौन किंतु अत्यंत प्रभावी शैक्षिक क्रांति की साक्षी बन रही है। इस वैचारिक क्रांति का ध्वजवाहक है चम्पारण-ज्ञानाग्रह। यह केवल एक दैनिक बुलेटिन या पीडीएफ श्रृंखला नहीं है, बल्कि टीचर्स ऑफ बिहार के समर्पित शिल्पकारों द्वारा गढ़ा गया एक ऐसा बौद्धिक अनुष्ठान है, जो राज्य के सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों के सरकारी विद्यालयों में ज्ञान की गंगा प्रवाहित कर रहा है। चम्पारण सत्याग्रह की पावन स्मृतियों से ऊर्जस्वित यह पत्रिका आज बिहार के हजारों विद्यालयों की प्रार्थना सभाओं का प्राण बन चुकी है। इस महती परियोजना के केंद्र में जिले के बगहा दो प्रखंड क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालय बोदसर के प्रधान शिक्षक शैलेन्द्र कुमार का तपस्वी व्यक्तित्व है। उनके प्रधान संपादकीय और संकलन कौशल

चंपारण ज्ञानाग्रह टीम द्वारा जारी बुलेटिन।

निष्कर्ष : दैनिक ज्ञानकोश बिहार के शैक्षिक परिदृश्य पर एक अमिट हस्ताक्षर बन चुका है

टीचर्स ऑफ बिहार- द चेंज मेकर्स के बैनर तले प्रकाशित यह पत्रिका यह सिद्ध करती है कि बिना किसी व्यावसायिक स्वार्थ या सरकारी वित्त पोषण के भी यदि संकल्प शक्ति दृढ़ हो, तो शिक्षा के क्षेत्र में युगांतरकारी परिवर्तन लाया जा सकता है। यह दैनिक ज्ञानकोश बिहार के शैक्षिक परिदृश्य पर अमिट हस्ताक्षर बन चुका है। चम्पारण-ज्ञानाग्रह केवल शब्दों का संकलन नहीं है; यह शैलेन्द्र कुमार व टीम के उस अटूट विश्वास का प्रतिबिंब है कि शिक्षक बदलेंगे, तो

शिक्षक संवर्धन खंड केवल सूचनात्मक लेखों का संग्रह नहीं, यह शिक्षकों के व्यावसायिक कौशल व शिक्षण पद्धतियों के नवाचार का एक विमर्श मंच है। मनोज कुमार झा के लेखों में मनोविज्ञान, विद्यालय प्रबंधन व शैक्षिक चुनौतियों का जो विश्लेषण मिलता है। वह शिक्षकों को पारंपरिक ढर्रे से निकालकर आधुनिक शिक्षण की ओर प्रेरित करता है। यह खंड शिक्षकों को यह अहसास कराता है कि वे केवल कर्मचारी नहीं,बल्कि समाज के चेंज मेकर्स हैं। जब एक शिक्षक इस पत्रिका के माध्यम से नई शिक्षण विधियों,बाल मनोविज्ञान और नेतृत्व कौशल से लैस होता है,तो उसका सीधा लाभ कक्षा के अंतिम

हिन्दुस्तान

सामान्य बुद्धि के साथ सिलेबस ज्ञान बढ़ा रहा 'चंपारण ज्ञानाग्रह'

हि विशेष

■ चन्द्रभूषण शांडिल्य

बगहा। सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों को कम समय से अधिक से अधिक जानकारी देने को नित नवाचार होते रहते हैं। ऐसा ही एक नवाचार बगहा के एक विद्यालय से शुरु हुआ जो आज करीब-करीब एक हजार विद्यालयों में फॉलो किया जा रहा है। रोज प्रार्थना की घंटी बजने के बाद इसका वाचन होता है और बच्चों को नयी जानकारी मिलती है। हम बात कर रहे हैं 'चंपारण ज्ञानाग्रह' की। जिले के बगहा दो प्रखंड के मंगलपुर अवसानी पंचायत के राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय औसानी से रोज सुबह चंपारण ज्ञानाग्रह तैयार कर विभिन्न विद्यालयों के ग्रुपों में भेजा जाता है, जिसका उपयोग रोज किया जाता है। एनसीईआरटी की पुस्तकों से तैयार की गई प्रश्नोत्तरी का यह ज्ञानाग्रह बच्चों के सामान्य बुद्धि के साथ ही सिलेबस ज्ञान को भी बढ़ा रहा है। चंपारण ज्ञानाग्रह को बनाने वाले राजकीय प्राथमिक विद्यालय बोदसर

- चेतना सत्र के दौरान होता है इस प्रार्थना सभा सामग्री का
- गर्मियो की छुट्टी के दौरान शुरु हुआ चंपारण ज्ञानाग्रह, मिला टीचर्स ऑफ बिहार ग्रुप का साथ

के प्रधान शिक्षक शैलेन्द्र कुमार ने बताया कि गर्मियों की छुट्टी के दौरान सोचा कि आखिरकार बच्चों से कैसे कनेक्ट रहा जाए तथा पढ़ाई के प्रति उनमें रुचि कैसे जगायी जाए। काफी विचार विमर्श के बाद प्रश्नों की श्रृंखला तैयार की, जिसका नाम रखा चंपारण ज्ञानाग्रह। इसको कुछ शिक्षा वाले ग्रुपों में शेयर किया रिस्पॉन्स अच्छा मिला। विद्यालय खुलने के बाद कई विद्यालयों में चेतना सत्र के दौरान उसका वाचन शुरू किया गया। आज हजार के करीब विद्यालय ऐसे हैं जो इसका उपयोग प्रार्थना सभा में करते हैं। अब तक इसके 108 अंक प्रकाशित हो चुके हैं। इसको एक बेहतर प्लेटफार्म उपलब्ध कराने में टीचर्स ऑफ बिहार ग्रुप ने दिया।

01
सौ आठ अंक का हो चुका प्रकाशन

सामान्य विज्ञान से ज्ञान तक के प्रश्न होते हैं समाहित

चंपारण ज्ञानाग्रह के 108वें अंक मे प्रश्न है, प्रकाश का प्रकीर्णन किसके कारण होता है। रक्त मे यूरिया का उत्सर्जन कहा से होता है, तत्वो का वर्गीकरण किसने किया। विद्युत परिपथ मे स्विच का कार्य, पर्यावरण मे प्राथमिक उत्पादक, मानव मे पाचन एंजाइम का उदाहरण, चौरंगी के लेखक कौन है। इसके अतिरिक्त शब्द संगम, मुख्य समाचार, विदेशी समाचार, बिहार की खबर, खेल की समाचार और अंत मे प्रेरक प्रसंग शामिल है।

4 दैनिक जागरण मुजफ्फरपुर,08 मई, 2026
बगहा जागरण

'चंपारण-ज्ञानाग्रह' शिक्षकों के प्रयास से हर गांव तक पहुंची शिक्षा की नई अलख

संवाद सूत्र, जागरण• बगहा: बिहार की ऐतिहासिक ज्ञान परंपरा को नई ऊर्जा देते हुए बगहा अनुमंडल से एक सराहनीय शैक्षिक पहल सामने आई है। 'चंपारण-ज्ञानाग्रह' नामक दैनिक शैक्षिक पत्रिका आज सरकारी विद्यालयों में शिक्षा के स्वरूप को बदलने का कार्य कर रही है। बिना किसी बड़े बजट या सरकारी योजना के, शिक्षकों के सामूहिक संकल्प और समर्पण से यह पहल हजारों बच्चों के बौद्धिक और नैतिक विकास का माध्यम बन चुकी है। चम्पारण की ऐतिहासिक धरती से शुरू हुआ यह प्रयास अब एक शैक्षिक आंदोलन का रूप ले चुका है। विद्यालयों की प्रार्थना सभाओं में इस पत्रिका का उपयोग

- यह पत्रिका सरकारी विद्यालयों में बदल रही शिक्षा का स्वरूप
- शिक्षकों के सामूहिक प्रयास से तैयार हुई यह दैनिक पत्रिका

भाषा कौशल, समसामयिक घटनाओं और जीवन मूल्यों की जानकारी दी जा रही है। इससे शिक्षा केवल पुस्तकों तक सीमित न रहकर व्यावहारिक और जीवनोपयोगी बन रही है। दूरदर्शी नेतृत्व में आकार ले रही इस पहल का नेतृत्व राजकीय प्राथमिक विद्यालय बोदसर बगहा दो के प्रधान शिक्षक शैलेन्द्र कुमार कर रहे हैं। उनके मार्गदर्शन में शिक्षकों की एक टीम पिन्टू कुमार, सौरभ कुमार,

प्रखंड संसाधन केंद्र बगहा दो • जागरण

राव, मनोज कुमार और मनोज कुमार झा प्रतिदिन पत्रिका का संपादन और प्रकाशन कर रही है। टीम द्वारा तैयार सामग्री विद्यार्थियों के स्तर के अनुरूप सरल, रोचक और प्रभावी होती है।

सप्तऋषि माडल से सर्वांगीण संरचना बहुआयामी है, जिसे 'सप्तऋषि माडल' के रूप में विकसित किया गया है। इसमें प्रार्थना सभा, सामान्य ज्ञान, भाषा विकास, 'आज का अखबार' और प्रेरक प्रसंग जैसे खंड शामिल हैं। यह माडल विद्यार्थियों के मानसिक,

> सरकारी विद्यालयों मे इस प्रकार की नवाचारी पहल बच्चो के शैक्षिक वातावरण को समृद्ध करती है। चंपारण-ज्ञानाग्रह विद्यार्थियों के ज्ञान, अनुशासन और व्यक्तित्व विकास मे सकारात्मक भूमिका निभा रही है। यह अन्य विद्यालयों के लिए भी प्रेरणास्रोत है।
>
> फूदन राम, बीईओ, बगहा दो

संतुलित रूप से आगे बढ़ाता है।

शिक्षक संवर्धन पर विशेष जोर: पत्रिका का 'शिक्षक संवर्धन' खंड शिक्षकों के निरंतर विकास पर केंद्रित है। इसमें आधुनिक शिक्षण विधियां, कक्षा प्रबंधन और बाल मनोविज्ञान जैसे विषयों पर लेख प्रकाशित किए जाते हैं, जिससे शिक्षक भी स्वयं को अपडेट रखते

कैरियर मार्गदर्शन और जागरूकता: ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों को ध्यान में रखते हुए पत्रिका में कैरियर मार्गदर्शन से जुड़े विषयों को भी शामिल किया गया है। इसके साथ ही स्वास्थ्य, आपदा प्रबंधन और सामाजिक सुरक्षा जैसे मुद्दों पर भी जागरूकता फैलायी जा रही है।

शिक्षा से बदलाव की दिशा: 'टीचर्स आफ बिहार—द चेंज मेकर्स' के बैनर तले संचालित यह पहल यह साबित कर रही है कि सीमित संसाधनों में भी बड़ा बदलाव संभव है। 'चम्पारण-ज्ञानाग्रह' अब केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि शिक्षा के माध्यम से समाज परिवर्तन का सशक्त

"बिहार दर्शन : अरवल, अंक–2"

'संपादकीय'✍️

शीर्षक: अरवल: मधुश्रवा का पावन तीर्थ, कुर्था का राष्ट्रवाद और किसान चेतना

अरवल का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परिवेश केवल नवीन प्रशासनिक सीमाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह प्राचीन पौराणिक मान्यताओं, शैव आस्था और सामाजिक न्याय के जन-संघर्षों से गहराई से जुड़ा हुआ है। जिले का सबसे प्रमुख आध्यात्मिक केंद्र कलेर प्रखंड में स्थित मधुश्रवा धाम (Madhushrava Dham) है। पौराणिक आख्यानों के अनुसार, यह स्थान महर्षि च्यवन की तपोभूमि माना जाता है। यहाँ स्थित प्राकृतिक जल-कुंड और प्राचीन शिव मंदिर में सावन और महाशिवरात्रि के अवसर पर लगने वाला मेला मगध और शाहाबाद अंचल के श्रद्धालुओं के लिए अगाध आस्था का केंद्र है।

धार्मिक समन्वय के धरातल पर अरवल में कई प्राचीन सूफी मज़ारें और ऐतिहासिक मस्जिदें भी स्थित हैं, जो सोन नदी के कछारों में सदियों से चली आ रही 'गंगा-जमुनी तहज़ीब' और सामाजिक सौहार्द को प्रदर्शित करती हैं। सोन और पुनपुन के दोआब में बसे इस इलाके में लोक-संस्कृति, कजरी और मगही गीतों की एक जीवंत परंपरा पीढ़ी-दर-पीढ़ी प्रवाहित होती रही है।

आधुनिक इतिहास में अरवल की पहचान किसान चेतना और सामाजिक आंदोलनों के एक धधकते केंद्र के रूप में रही है। 1930 और 1940 के दशक में स्वामी सहजानंद सरस्वती और किसान सभा के प्रभाव से यहाँ के काश्तकारों ने जमींदारी शोषण और बेगारी प्रथा के खिलाफ संगठित आवाज उठाई थी। इस क्षेत्र के किसानों ने सोन नहर प्रणाली के जल-अधिकारों और बकाश्त ज़मीनों के लिए जो संघर्ष किए, उन्होंने पूरे मगध में भूमि-सुधार और काश्तकारी अधिकारों की चेतना को नई धार दी।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अरवल के वीर सपूतों का योगदान अत्यंत उल्लेखनीय रहा। 1942 के 'भारत छोड़ो आंदोलन' के दौरान कुर्था और अरवल क्षेत्र क्रांति की मुख्य धुरी बने। कुर्था थाने पर तिरंगा फहराने के प्रयास में ब्रिटिश पुलिस की गोलियों का सामना करते हुए अमर शहीद श्याम नारायण सिंह और उनके साथियों ने अपने प्राणों की आहुति दी थी। इस बलिदान ने समूचे शाहाबाद और मगध में स्वाधीनता की अलख को और प्रखर कर दिया था।

अरवल का यह दूसरा ऐतिहासिक अंक यह प्रमाणित करता है कि यहाँ की माटी में आध्यात्मिक शांति, सोन की अविरल चेतना और अन्याय के विरुद्ध डटकर खड़े होने वाला इंकलाबी जज़्बा एक साथ धड़कता है। मधुश्रवा का पावन जल हो, कुर्था के अमर शहीदों का रक्त हो या किसान आंदोलनों का स्वाभिमान—ये सभी तत्व मिलकर अरवल को बिहार के इतिहास का एक अमिट अध्याय बनाते हैं।

...........✍️
शैलेन्द्र कुमार
प्रधान शिक्षक
रा.प्रा.वि. बोदसर, बगहा-2

Reg. No. BR/2025/0487469

"चम्पारण-ज्ञानाग्रह"

आइए, हम मिलकर छात्रों के ज्ञान, प्रेरणा और जिज्ञासा को नयी दिशा दें। 🌿🙏

Thank You..

बच्चों के हितार्थ अपना बहुमूल्य समय देने के लिए।

संपादक:-

शैलेन्द्र कुमार

'प्रधान शिक्षक'

Govt. PS बोदसर,

बगहा-2, प. चम्पारण।

(10010803702)

📱-9939671700

अगर आपके मन में कोई नया विचार, कोई इवेंट, कोई एक्टिविटी या किसी बदलाव की पहल है, तो कृपया टीम में बताइए।

+917250818080

teachersofbihar@gmail.com

+917250818080

www.teachersofbihar.org